नारीवाद

नारीवाद, राजनैतिक आन्दोलनों, विचारधाराओं और सामाजिक आंदोलनों की एक श्रेणी है, जो राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत और सामाजिक लैंगिक समानता को परिभाषित करने, स्थापित करने और प्राप्त करने के एक लक्ष्य को साझा करते हैं। इसमें महिलाओं के लिए पुरुषों के समान शैक्षिक और पेशेवर अवसर स्थापित करना शामिल है।

नारीवादी सिद्धांतों का उद्देश्य लैंगिक असमानता की प्रकृति एवं कारणों को समझना तथा इसके फलस्वरूप पैदा होने वाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर इसके असर की व्याख्या करना है। स्त्री विमर्श संबंधी राजनैतिक प्रचारों का जोर प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसापर रहता है।

स्त्रीवादी विमर्श संबंधी आदर्श का मूल कथ्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग न बने।

आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से

Scanned with CamScanner

पश्चिमी मूल्यों एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं। हालाँकि जमीनी स्तर पर स्त्रीवादी विमर्श हर देश एवं भौगोलिक सीमाओं मे अपने स्तर पर सक्रिय रहती हैं और हर क्षेत्र के स्त्रीवादी विमर्श की अपनी खास समस्याएँ होती हैं।

सिद्धान्त

मुख्य लेख: नारीवादी सिद्धान्त

नारीवादी सिद्धांत, सैद्धांतिक या दार्शनिक क्षेत्रों में नारीवाद का विस्तार है। इसमें नृविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, महिला अध्ययन, साहित्यिक आलोचना,,[1][2] कला इतिहास, मनोविश्लेषण और दर्शन जैसे कई अंतर्गत विषय शामिल है। नारीवादी सिद्धांत का लक्ष्य लैंगिक असमानता को समझना है और लैंगिक राजनीति, शक्ति संबंधों और लैंगिकता पर ध्यान केंद्रित करना है। इन सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की आलोचना करते हुए, नारीवादी सिद्धांत का ज्यादातर हिस्सा महिलाओं के अधिकारों और हितों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। नारीवादी सिद्धांत में खोजे गए विषयों में भेदभाव, रूढ़िवादिता, वस्तुनिष्ठता (विशेष रूप से यौन वस्तुकरण), उत्पीड़न और पितृसत्ता शामिल हैं। साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में, ऐलेन शोलेटर ने तीन चरणों वाले नारीवादी सिद्धांत के विकास का वर्णन किया है। पहले वह "नारीवादी आलोचना" कहती है, जिसमें नारीवादी पाठक साहित्यिक घटनाओं के पीछे की

Scanned with CamScanner

विचारधाराओं की जांच करती है। दूसरे को शॉल्डर "गाइनोक्रिटिसिज्म" कहती है, जिसमें "महिला पाठात्मक अर्थ की निर्माता है"। आखिरी चरण को वे "लिंग सिद्धांत" कहती है, जिसमें "वैचारिक शिलालेख और यौन/लिंग प्रणाली के साहित्यिक प्रभाव का पता लगाया जाता है"।[3]

यह 1970 के दशक में फ्रांसीसी नारीवादियों द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने *क्रीचर फेमिनाइन* (जो 'महिला या स्त्री लेखन' के रूप में अनुवादित है) की अवधारणा विकसित की थी। हेलेन सिक्सस का तर्क है कि लेखन और दर्शन एक दूसरे के साथ-साथ *फुलेउरेंथ्रिक* हैं और अन्य फ्रांसीसी नारीवादियों जैसे लुस इरिगेराय ने "शरीर से लेखन" को एक विध्वंसक अभ्यास के रूप में महत्व दिया है। एक नारीवादी मनोविश्लेषक और दार्शनिक, और ब्राचा एटिंगर, कलाकार और मनोविश्लेषक, जूलिया क्रिस्टेवा के काम ने विशेष रूप से नारीवादी सिद्धांत को प्रभावित किया है और विशेष रूप से नारीवादी साहित्यिक आलोचना। हालांकि, जैसा कि विद्वान एलिजाबेथ राइट बताते हैं, "इनमें से कोई भी फ्रांसीसी नारीवादी खुद को नारीवादी आंदोलन के साथ संरेखित नहीं करती है जैसा कि अंग्रेजीभाषी दुनिया में दिखाई दिया था"। अधिकतर हालिया नारीवादी सिद्धांत, जैसे कि लिसा ल्यूसिल ओवेन्स[4] द्वारा नारीवाद को सार्वभौमिक मुक्ति आंदोलन के रूप में चित्रित करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

Scanned with CamScanner

नारीवादी आन्दोलन और विचारधाराऐं

मुख्य लेख: नारीवादी आन्दोलन और विचारधाराऐं

शुक्र प्रतीक पर आधारित नारीवाद का प्रतीक।

कई अतिव्यापी नारीवादी आंदोलनों और विचारधाराओं ने वर्षों में विकसित हुये है।

राजनैतिक आन्दोलनें

नारीवाद की कुछ शाखाएँ बृहद समाज के राजनीतिक झुकाव को बारीकी से नजर रखती हैं, जैसे उदारवाद और रूढ़िवाद, या पर्यावरण पर ध्यान केंद्रण। उदारवादी नारीवाद, समाज की संरचना को बदले बिना राजनीतिक और कानूनी सुधार के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं की

Scanned with CamScanner

व्यक्तिवादी समानता की तलाश करता है। (कैथरीन रोटेनबर्ग) ने तर्क दिया है कि उदारवदी नारीवाद में नवउदारवादी चोले द्वारा नारीवाद के उस स्वरूप को सामूहिकता के बजाय व्यक्तिगत रूप से अलग-थलग किया जा रहा है और सामाजिक असमानता से अलग हो रहे है। इसके कारण वह तर्क देती है कि उदारवादी नारीवाद पुरुष प्रभुत्व, शक्ति या विशेषाधिकार की संरचनाओं के किसी भी निरंतर विश्लेषण की पेशकश नहीं कर सकता है।

भौतिकवादी विचारधारा

रोज़मेरी हेनेसी और क्रिस इंग्राहम का कहना है कि नारीवाद का भौतिकवादी रूप पश्चिमी मार्क्सवादी विचार से विकसित हुआ हैं, और कई अलग-अलग (लेकिन अतिव्यापी) आंदोलनों के लिए प्रेरित किया है, जो सभी पूंजीवाद की आलोचना में शामिल हैं और महिलाओं के लिए विचारधारा के संबंधों पर केंद्रित हैं। मार्क्सवादी नारीवाद का तर्क है कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न का मूल कारण है, और घरेलू जीवन और रोजगार में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव पूंजीवादी विचारधाराओं का एक परिणाम है।

Scanned with CamScanner

अश्वेत और उत्तर औपनिवेशिक विचारधाराएँ

सारा अहमद का तर्क है कि अश्वेत और उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद "पश्चिमी नारीवादी विचार के कुछ आयोजन परिसरों" के लिये एक चुनौती पेश करती है। अपने अधिकांश इतिहास के दौरान, पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की मध्यम वर्ग की श्वेत महिलाओं द्वारा नारीवादी आंदोलनों और सैद्धांतिक विकास का नेतृत्व किया गया था। हालाँकि अन्य जातियों की महिलाओं ने वैकल्पिक नारीवाद का प्रस्ताव रखा है। 1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकारों के आंदोलन और अफ्रीका, कैरिबियन, लैटिन अमेरिका के कुछ हिस्सों और दक्षिण पूर्व एशिया में यूरोपीय उपनिवेशवाद के पतन के साथ इस प्रवृत्ति में तेजी आई। उस समय से, विकासशील देशों और पूर्व उपनिवेशों में रहने वाली महिलाएं, जो रंग या विभिन्न जातीयता की हैं या गरीबी में रह रही हैं, ने अतिरिक्त नारीवाद का प्रस्ताव दिया है।

सामाजिक निर्माणवादी विचारधाराएँ

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विभिन्न नारीवादियों ने तर्क दिया कि लिंग की भूमिका सामाजिक रूप से निर्मित है, और यह कि संस्कृतियों और इतिहासों में महिलाओं के अनुभवों को सामान्य बताना असंभव है। उत्तर-

Scanned with CamScanner

^ स्त्री विमर्श के विभिन्न रूप

नारीवाद के छोटे पहलू

- साँस्कृतिक नारीवाद
- पर्यावरणीय नारीवाद
- समतामूलक नारीवाद
- समलैंगिक नारीवाद
- उदारवादी नारीवाद
- वैय्क्तिक नारीवाद
- मार्कसवादी नारीवाद अथवा समाजवादी नारीवाद
- भौतिक नारीवाद
- बहु-साँस्कृतिक नारीवाद
- विखंडनवादी नारीवाद
- आध्यात्मिक नारीवाद

Scanned with CamScanner

^ प्रतिक्रियाएँ

लोगों के विभिन्न समूहों की नारीवाद को लेकर अपनी-अपनी प्रतिक्रिया है, और इसके समर्थकों और आलोचकों में दोनों पुरुष और महिलाएं शामिल हैं। अमेरिकी विश्वविद्यालय के छात्रों का, जिनमें दोनो लड़के और लड़कियाँ दोनो शामिल है, स्वंय को नारीवादी के रूप में बताने के बजाय नारीवादी विचारों को लेकर समर्थन करना अधिक सामान्य है।[5][6][7]

नारीवाद समर्थक

प्रो-फेमिनिज़्म, उन नारीवाद के समर्थन को कहते है जोकि नारीवादी आंदोलन के सदस्य नहीं होते है। इस शब्द का उपयोग अक्सर उन पुरुषों के संदर्भ में किया जाता है जो नारीवाद का सक्रिय समर्थन करते हैं। नारी-समर्थक पुरुष समूहों की गतिविधियों में स्कूलों में लड़कों और युवा पुरुषों के साथ हिंसा रोकने जैसे कार्य, कार्यस्थलों में यौन उत्पीड़न कार्यशालाओं की पेशकश करना, सामुदायिक शिक्षा

Scanned with CamScanner

संरचनात्मक नारीवाद, उत्तर-संरचनावाद और विखंडन के दर्शन पर बहस करने के लिए यह तर्क देता है कि लिंग की अवधारणा सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रवचन के माध्यम से बनाई गई है। उत्तर आधुनिक नारीवादियों ने लिंग के सामाजिक निर्माण और वास्तविकता की विवेकी प्रकृति पर भी जोर दिया।

ट्रान्सजेंडर लोग

ट्रांसजेंडर लोगों पर नारीवादी विचार भिन्न हैं। कुछ नारीवादी ट्रांस महिलाओं को महिलाओं के रूप में नहीं देखते हैं, उनका मानना है कि जन्म के समय उनके लिंग के कारण उन्हें अभी भी पुरुष विशेषाधिकार प्राप्त है। इसके अतिरिक्त, कुछ नारीवादी "ट्रांसजेंडरवाद" को विचारों के कारण अस्वीकार करते हैं कि लिंग के बीच सभी व्यवहारिक मतभेद समाजीकरण का परिणाम हैं। इसके विपरीत, कई नारीवादियों और ट्रांसनारीवादियों का मानना है कि लिंग परिवर्तित महिलाओं की मुक्ति नारीवादी लक्ष्यों का एक आवश्यक हिस्सा है। नारीवाद की तीसरी लहर, ट्रान्स अधिकारों का अधिक समर्थन करते हैं। ट्रांसनारीवाद में एक प्रमुख अवधारणा ट्रांसस्त्रीद्वेष की है, जहाँ लिंग परिवर्तित महिलाओं या स्त्रीलिंग लिंग गैर अनुरूपता के प्रति तर्कहीन डर, घृणा, या भेदभाव किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अभियान चलाना और हिंसा में लिप्त पुरुष अपराधियों की काउंसलिंग शामिल है। प्रो-फेमिनिस्ट पुरुष, पुरुषों के स्वास्थ्य सम्बंधित कार्यक्रम जैसे: पोर्नोग्राफी के खिलाफ सक्रियता, जिसमें पोर्नोग्राफी विरोधी कानून, पुरुषों का अध्ययन और स्कूलों में लिंग इक्विटी पाठ्यक्रम का विकास आदि में भी शामिल होते है। कभी-कभी नारीवादी और महिला संगठन साथ आकर, घरेलू हिंसा और बलात्कार संकट केंद्रों में सहयोग करते है।[8][9]

Scanned with CamScanner